ISSN 2347-5145 (Print)
2454-2687 (Online)

Available online at
www.anvpublication.org

International Journal of
Reviews and Research in Social Sciences

Vol. 07 | Issue-01 |
January- March 2019

RESEARCH ARTICLE

फाँस उपन्यास में कर्ज से ग्रस्त किसान जीवन की त्रासदी

पवित्रा

पीएच० डी० शोधार्थी, हिंदी विभाग, महर्षि दयानद विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)
*Corresponding Author E-mail:

ABSTRACT:
भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ अधिकाश आबादी गाँव मे निवास करती है और गाँव के लोगो का मुख्य कार्य कृषि है। किसान पर हमारी अर्थव्यवस्था टिकी हुई है। फिर भी किसानो को उनकी फसल का उचित मूल्य नही मिल पाता। आदि काल से लेकर उत्तर आधुनिक काल तक किसानपिसता आ रहा है। आज भी खेती सरकार की दृष्टि मे न के बराबर है। जिसके कारण किसान कर्ज मे डूब जाता है और आत्महत्या करने को मजबूर हो जाता है। किसान कर्ज से ग्रस्त होकर त्रासदी पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है।

KEYWORDS: अर्थव्यवस्था, नीतियाँ, सब्सिडी, कर्ज, उत्पादन, त्रासदी।

प्रस्तावना :
देश की आबादी को 70 साल होने को है। देश मे तेजी से विकास हो रहा है और नई–नई तकनीकी लोगों को आकर्षित कर रही है। आज भले हीभारत मीडिया और राजनेताओं के कहे अनुसार हो गया है.परन्तु जब हम किसानो को आत्महत्या करते हुए देखते हैं, रिक्शा चलाते मजदूरो को देखते है, तो लगता है– बदलाव और विकास की बाते राजनीति का मुद्दा भले ही हो.परन्तु लोगो के जीवन मे परिवर्तन नही कर सका।

यह निर्विवाद सत्य है कि भारत प्राचीन काल से कृषि प्रधान देश रहा है। भारत की सपूर्ण अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर ही आधारित है.परन्तु सत्य यह है कि कृशि से जुडा हुआ किसान आज अपनीपूर्वावस्था से अधिक दयनीय स्थिति मे जी रहा है। शायद ही एसा कोई दिन होगा, जहाँ समाचार पत्रो मे कृशक आत्महत्याओ का उल्लेख नही हो। कृशि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ की हड्डी है. हालात ऐसे उत्पन्न हो गए हैं कि सभी वैश्विक व्यवस्थाएँमजबूत होती जा रही है और किसानीव्यवस्था ही अर्थव्यवस्था के इस दौर मे हाशिए पर ढकेल दी गई है और किसान कर्ज से ग्रस्त होकर त्रासदी का जीवन व्यतीत कर रहा है।

Received on 02.01.2019 Modified on 19.01.2019
Accepted on 13.03.2019
© A&V Publications All right reserved
Int. J. Rev. and Res. Social Sci. 2019; 7(1): 263-266.

ISSN 2347-5145 (Print)
2454-2687 (Online)

Vol. 07| Issue-01|
January- March 2019

Available online at
www.anvpublication.org

International Journal of
Reviews and Research in Social Sciences

RESEARCH ARTICLE

फाँस उपन्यास में कर्ज से ग्रस्त किसान जीवन की त्रासदी

पवित्रा
पीएच० डी० शोधार्थी, हिंदी विभाग, महर्षि दयानद विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)
*Corresponding Author E-mail

ABSTRACT:
भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ अधिकाश आबादी गाँव में निवास करती है और गाँव के लोगों का मुख्य कार्य कृषि है। किसान पर हमारी अर्थव्यवस्था टिकी हुई है। फिर भी किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। आदि काल से लेकर उत्तर आधुनिक काल तक किसानपिसता आ रहा है। आज भी खेती सरकार की दृष्टि में न के बराबर है। जिसके कारण किसान कर्ज में डूब जाता है और आत्महत्या करने को मजबूर हो जाता है। किसान कर्ज से ग्रस्त होकर त्रासदी पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है।

KEYWORDS: अर्थव्यवस्था, नीतियाँ, सब्सिडी, कर्ज, उत्पादन, त्रासदी।

प्रस्तावना :

देश की आबादी को 70 साल होने को है। देश में तेजी से विकास हो रहा है और नई–नई तकनीकी लोगों को आकर्षित कर रही है। आज भले हीभारत मीडिया और राजनेताओं के कहे अनुसार हो गया है,परन्तु जब हम किसानों को आत्महत्या करते हुए देखते है, रिक्शा चलाते मजदूरों को देखते हैं, तो लगता है– बदलाव और विकास की बाते राजनीति का मुद्दा भले ही हो,परन्तु लोगों के जीवन में परिवर्तन नहीं कर सका।

Received on 02.01.2019 Modified on 19.01.2019
Accepted on 13.03.2019 © A&V Publications All right reserved
Int. J. Rev. and Res. Social Sci. 2019; 7(1): 263-266.

यह निर्विवाद सत्य है कि भारत प्राचीन काल से कृषि प्रधान देश रहा है। भारत की सपूर्ण अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर ही आधारित है,परन्तु सत्य यह है कि कृशि से जुडा हुआ किसान आज अपनीपूर्वावस्था से अधिक दयनीय स्थिति में जी रहा है। शायद ही ऐसा कोई दिन होगा, जहाँ समाचार पत्रों में कृशक आत्महत्याओं का उल्लेख नहीं हो। कृशि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ की हड्डी है, हालात ऐसे उत्पन्न हो गए हैं कि सभी व्यवस्थाएँमजबूत होती जा रही है और वैश्विक अर्थव्यवस्था के इस दौर में किसानीव्यवस्था ही हाशिए पर ढकेल दी गई है और किसान कर्ज से ग्रस्त होकर त्रासदी का जीवन व्यतीत कर रहा है।

ISSN 2347-5145 (Print)
2454-2687 (Online)

Vol. 07 | Issue-01|
January - March 2019

Available online at
www.anvpublication.org

International Journal of
Reviews and Research in Social Sciences

RESEARCH ARTICLE

फाँस उपन्यास में कर्ज से ग्रस्त किसान जीवन की त्रासदी

पवित्रा

पीएच० डी० शोधार्थी, हिंदी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)
*Corresponding Author E-mail:

ABSTRACT:
भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ अधिकांश आबादी गाँव मे निवास करती है और गाँव के लोगो का मुख्य कार्य कृषि है। किसान पर हमारी अर्थव्यवस्था टिकी हुई है। फिर भी किसानो को उनकी फसल का उचित मूल्य नही मिल पाता। आदि काल से लेकर उत्तर आधुनिक काल तक किसानपिसता आ रहा है। आज भी खेती सरकार की दृष्टि में न के बराबर है। जिसके कारण किसान कर्ज मे डूब जाता है और आत्महत्या करने को मजबूर हो जाता है। किसान कर्ज से ग्रस्त होकर त्रासदी पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है।

KEYWORDS: अर्थव्यवस्था, नीतियाँ, सब्सिडी, कर्ज, उत्पादन, त्रासदी।

प्रस्तावना :

देश की आबादी को 70 साल होने को है। देश में तेजी से विकास हो रहा है और नई–नई तकनीकी लोगों को आकर्षित कर रही है। आज भले हीभारत मीडिया और राजनेताओं के कहे अनुसार हो गया है,परन्तु जब हम किसानों को आत्महत्या करते हुए देखते हैं, रिक्शा चलाते मजदूरों को देखते हैं, तो लगता है– बदलाव और विकास की बातें राजनीति का मुद्दा भले ही हो,परन्तु लोगों के जीवन में परिवर्तन नहीं कर सका।

यह निर्विवाद सत्य है कि भारत प्राचीन काल से कृषि प्रधान देश रहा है। भारत की संपूर्ण अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर ही आधारित है,परन्तु सत्य यह है कि कृशि से जुडा हुआ किसान आज अपनीपूर्वावस्था से अधिक दयनीय स्थिति मे जी रहा है। शायद ही ऐसा कोई दिन होगा, जहाँ समाचार पत्रों में कृशक आत्महत्याओ का उल्लेख नही हो। कृशि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है, हालात ऐसे उत्पन्न हो गए हैं कि सभी व्यवस्थाएँमजबूत होती जा रही है और वैश्विक अर्थव्यवस्था के इस दौर मे किसानीव्यवस्था ही हाशिए पर ढकेल दी गई है और किसान कर्ज से ग्रस्त होकर त्रासदी का जीवन व्यतीत कर रहा है।

Received on 02 01 2019 Modified on 19 01 2019
Accepted on 13 03 2019
© A&V Publications All right reserved
Int. J. Rev. and Res. Social Sci. 2019; 7(1): 263-266.

Scanned with OKEN Scanner